॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

ऋग्वेदीय

श्रीराधोपनिषद्

शान्तिपाठ

ॐ वाङ् मे मनसि प्रतिष्ठिता मनो मे वाचि प्रतिष्ठितमाविरावीर्म एधि। वेदस्य म आणीस्थः श्रुतं मे मा प्रहासीः। अनेनाधीतेनाहोरात्रान् संदधाम्यृतं वदिष्यामि। सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु। तद्वक्तारमवतु। अवतु मामवतु वक्तारमवतु वक्तारम्॥

ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

श्रीराधाजीके स्वरूप तथा नामोंका वर्णन

ॐ एक बार ऊर्ध्वरेता सनकादि महर्षियोंने भगवान् श्रीब्रह्माजीकी स्तुति करके पूछा, 'देव! सर्वप्रधान देवता कौन हैं और उनकी कौन-कौन-सी शक्तियाँ हैं तथा उन शक्तियोंमें सृष्टिका सर्वश्रेष्ठ कारण कौन-सी शक्ति है?' यह सुनकर श्रीब्रह्माजी बोले—'पुत्रो! सुनो; किंतु इस अति गोपनीय रहस्यको तुम किसीसे प्रकट न करना—तुम इसे किसी ऐरे-गैरेको मत दे डालना। हाँ, जो स्नेही हों, ब्रह्मवादी हों, गुरुभक्त हों, उन्हें अवश्य देना। उनके अतिरिक्त और किसीको देनेसे महान् पाप लगेगा। भगवान् हरि श्रीकृष्ण ही परमदेव हैं। वे छहों ऐश्वर्योंसे पूर्ण भगवान् गोप और गोपियोंके सेव्य, श्रीवृन्दा (तुलसी) देवीसे आराधित और श्रीवृन्दावनके अधीश्वर हैं। वे ही एकमात्र सर्वेश्वर हैं। उन्हीं श्रीहरिके एक रूप नारायण भी हैं जो कि अखिल ब्रह्माण्डोंके अधीश्वर हैं। ये श्रीकृष्ण प्रकृतिसे भी पुरातन और नित्य हैं। उनकी आह्लादिनी, सन्धिनी, ज्ञान, इच्छा और क्रिया आदि बहुत-सी शक्तियाँ हैं। उनमें आह्लादिनी सर्वप्रधान हैं। ये ही परम अन्तरङ्गभूता श्रीराधा हैं। कृष्ण इनकी आराधना करते हैं, इसलिये ये राधा हैं; अथवा ये सर्वदा कृष्णकी आराधना करती हैं, इसलिये राधिका कहलाती हैं। श्रीराधाको गान्धर्वा भी कहते हैं; व्रजकी गोपाङ्गनाएँ, द्वारकाकी समस्त श्रीकृष्ण-महिषियाँ और श्रीलक्ष्मीजी इन्हीं श्रीराधिकाजीकी कायव्यूह (अंशरूपा) हैं। ये राधा और श्रीकृष्ण रस-सागर एक होते हुए ही शरीरसे क्रीड़ाके लिये दो हो गये हैं। ये श्रीराधिकाजी भगवान् हरिकी सर्वेश्वरी, सम्पूर्ण सनातनी विद्या हैं और श्रीकृष्णके प्राणोंकी अधिष्ठात्री देवी हैं। वेद एकान्तमें इनकी ऐसी ही स्तुति किया करते हैं। इनकी महिमाका मैं अपनी सम्पूर्ण आयुमें भी वर्णन नहीं कर सकता। जिसपर इनकी कृपा होती है, परमधाम उसके हाथमें आ जाता है। इन श्रीराधिकाजीको न जानकर जो श्रीकृष्णकी आराधना करना चाहता है, वह महामूर्ख है, मूढतम है। श्रुतियाँ इनके इन नामोंका गान करती हैं—१. राधा, २. रासेश्वरी, ३. रम्या, ४. कृष्ण-मन्त्राधिदेवता, ५. सर्वाद्या, ६. सर्ववन्द्या, ७. वृन्दावन-विहारिणी, ८. वृन्दाराध्या, ९. रमा, १०. अशेष-गोपीमण्डलपूजिता, ११. सत्या, १२. सत्यपरा, १३. सत्यभामा, १४. श्रीकृष्णवल्लभा, १५. वृषभानुसुता, १६. गोपी, १७. मूल-प्रकृति, १८. ईश्वरी, १९. गान्धर्वा, २०. राधिका, २१. आरम्या, २२. रुक्मिणी, २३. परमेश्वरी, २४. परात्परतरा, २५. पूर्णा, २६. पूर्णचन्द्र-

निभानना, २७. भुक्तिमुक्तिप्रदा तथा २८. भवव्याधि विनाशिनी। इन अट्ठाईस नामोंका जो पाठ करते हैं, वे जीवन्मुक्त हो जाते हैं। यों भगवान् श्रीब्रह्माजीने कहा है*।'

'(इस प्रकार भगवान्‌की आह्लादिनी-शक्ति श्रीराधिकाजीका वर्णन हुआ, अब उनकी सन्धिनी-शक्तिका विवरण सुनो।)' यह सन्धिनी-शक्ति धाम, भूषण, शय्या और आसनादि तथा मित्र और भृत्यादिके रूपमें परिणत होती है और मृत्युलोकमें अवतार लेनेके समय माता-पिताके रूपमें परिणत हो जाती है। यही अनेक अवतारोंका कारण है। ज्ञानशक्तिको ही क्षेत्रज्ञशक्ति कहते हैं और इच्छाशक्तिके अन्तर्भूत मायाशक्ति है। यह सत्त्व, रज और तमोगुणरूपा है तथा बहिरङ्ग और जड है। (जड होनेके कारण भगवान्‌की दृष्टि पड़नेसे) यह अनन्त कोटि ब्रह्माण्डोंकी रचना करती है तथा यही माया और अविद्यारूपसे जीवका बन्धन करती है। क्रियाशक्तिको ही लीलाशक्ति कहते हैं।

'जो इस उपनिषद्‌को पढ़ते हैं, वे अव्रती भी व्रती हो जाते हैं तथा वे अग्निपूत, वायुपूत और सर्वपूत हो जाते हैं। वे श्रीराधाकृष्णके प्रिय होते हैं और जहाँतक दृष्टिपात करते हैं, वहाँतक सबको पवित्र कर देते हैं। ॐ तत्सत्।'

॥ ऋग्वेदीय श्रीराधोपनिषद् समाप्त ॥

शान्तिपाठ

ॐ वाङ् मे मनसि प्रतिष्ठिता मनो मे वाचि प्रतिष्ठितमाविरावीर्म एधि। वेदस्य म आणीस्थः श्रुतं मे मा प्रहासीः। अनेनाधीतेनाहोरात्रान् संदधाम्यृतं वदिष्यामि। सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु। तद्वक्तारमवतु। अवतु मामवतु वक्तारमवतु वक्तारम्॥

ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

एकमात्र श्रीकृष्ण ही भजनीय हैं

एको वशी सर्वगः कृष्ण ईड्य एकोऽपि सन् बहुधा यो विभाति।
तं पीठस्थं येऽनुभजन्ति धीरास्तेषां सिद्धिः शाश्वती नेतरेषाम्॥
नित्यो नित्यानां चेतनश्चेतनानामेको बहूनां यो विदधाति कामान्।
तं पीठगं येऽनुभजन्ति धीरास्तेषां सुखं शाश्वतं नेतरेषाम्॥

(गोपालपू० ता०)

एकमात्र सबको वशमें रखनेवाले, सर्वव्यापी भगवान् श्रीकृष्ण सर्वथा स्तवन करने योग्य हैं। वे एक होकर भी बहुत रूपोंमें प्रकाशित हैं। जो धीर भक्त उन पीठस्थ भगवान्‌को भजते हैं, उन्हींको सनातनी सिद्धि मिलती है, दूसरोंको नहीं।

जो नित्योंके भी नित्य हैं, चेतनोंके भी परम चेतन हैं, जो एक ही बहुतोंकी कामना पूर्ण करते हैं, उन पीठस्थ श्रीभगवान्‌को जो धीर भक्त भजते हैं, उन्हींको सनातन सुख मिलता है, दूसरोंको नहीं।

---

* राधा रासेश्वरी रम्या कृष्णमन्त्राधिदेवता। सर्वाद्या सर्ववन्द्या च वृन्दावनविहारिणी॥
वृन्दाराध्या रमाशेषगोपीमण्डलपूजिता। सत्या सत्यपरा सत्यभामा श्रीकृष्णवल्लभा॥
वृषभानुसुता गोपी मूलप्रकृतिरीश्वरी। गान्धर्वा राधिकाऽऽरम्या रुक्मिणी परमेश्वरी॥
परात्परतरा पूर्णा पूर्णचन्द्रनिभानना। भुक्तिमुक्तिप्रदा नित्यं भवव्याधिविनाशिनी॥